गद्य काव्य contd.

1. दण्डी – काव्य-जगत की एक प्रशस्ति में वाल्मीकि और व्यास के बाद तीसरा स्थान दण्डी को ही दिया गया है। दशकुमार-चरित, अवन्तिसुन्दरी और काव्यादर्श – इनकी तीन रचनाओं के आधार पर इनका काल 600 ई० पू० माना गया है।

काव्यादर्श तीन परिच्छेदों का पद्यात्मक काव्यशास्त्रीय ग्रंथ है।

दशकुमारचरित – 'कथा और आख्यायिका मिश्रित इस ग्रंथ के पांच उच्छ्वासों की पूर्वपीठिका (2) आठ उच्छ्वासों का दशकुमार-चरित एवं (3) उपसंहार में मध्यभाग अर्थात् आठ उच्छ्वासों। के दशकुमार चरित को ही दण्डी कृत माना गया है। पहला और तीसरा भाग बाद में जोड़ा हुआ कहा जाता है।

('दशकुमार चरित' के तीन खण्डों में पूर्वपीठिका में कथा की पृष्ठभूमि के साथ दो कुमारों की पूरी किन्तु राजवाहन की अधूरी कथा दी गई है, जो नायक है।

मगध-नरेश राजहंस को मालव-नरेश मानसार ने पराजित करके विन्ध्याटवी में रहने को विवश कर दिया, जहाँ मगध-रानी वसुमती ने राजवाहन को जन्म दिया, उनके संरक्षण में नौ अन्य कुमार भी आए, जिनमें सात मंत्री-पुत्र थे, दो मिथिला-नरेश प्रहारवर्मा के पुत्र थे। दसों की शिक्षा साथ-साथ हुई तथा वे बड़े होने पर दिग्विजय के लिए निकल गए।

उपर्युक्त दस कुमारों की कथाओं से सम्बद्ध इस ग्रंथ के दस उच्छ्वास हैं। कथानक को ऐसा संघटित किया गया है कि रोचकता बनी रहे तथा कहीं भी कथा-वस्तु शिथिल न हो। दण्डी के पात्र अत्यन्त सजीव हैं।

दण्डी की प्रशस्ति के रूप में 'दण्डिनः पदलालित्यम्' अत्यन्त प्रसिद्ध आभाणक (उक्ति) है। पदलालित्य के निवेश से दण्डी ने साधारण विषय को भी चमत्कारी बना दिया है। तात्कालिक शिक्षा का भी सामान्य परिचय दण्डी ने दिया है।

Scanned with CamScanner

② सुबन्धु — सुबन्धु की एकमात्र रचना 'वासवदत्ता' है। वासव-दत्ता का कथानक पूर्णतः काल्पित है, कोई विभाजन यहाँ नहीं है। इसमें राजकुमार कन्दर्पकेतु तथा राजकुमारी वासव-दत्ता के प्रेम और विवाह का रोचक वृत्तान्त है। नायक-नायिका स्वप्न में एक-दूसरे के प्रति आसक्त होते हैं। नायक अपनी प्रियतमा की खोज में मित्र मकरन्द के साथ निकलकर विन्ध्य पर्वत पर पहुँचता है। वहाँ शुक-सारिका के संवाद से ज्ञात होता है कि वासवदत्ता की सारिका कन्दर्पकेतु के खोज में निकली है। पक्षियों की सहायता से ये परस्पर मिलते हैं, फिर कुछ सैकत आते हैं और दोनों का वियोग हो जाता है। वासवदत्ता को अकेली देखकर दो किरात दल उसे पाने के लिए आपस में लड़ने लगते हैं और मौका पाकर वासवदत्ता चुपचाप वहाँ से निकलकर एक मुनि के आश्रम में प्रवेश कर जाती है। अनाधिकार प्रवेश के कारण ऋषि के आश्रम में पाषाण हो जाती है। कन्दर्पकेतु वासवदत्ता के विरह में आत्महत्या करना चाहता है किन्तु आकाशवाणी से आश्वासन पाकर ठहर जाता है। एक दिन कन्दर्पकेतु के स्पर्श से पाषाण वासवदत्ता जीवित हो जाती है और कन्दर्पकेतु के साथ राजधानी लौट जाती है।

अत्यन्त लघुकाय कथानक को लम्बे प्रकृति-वर्णन, स्त्री-वर्णन, नगर-वर्णन, संवाद आदि में भरकर कवि ने अपने कलापक्ष का प्रदर्शन किया है। कथा को छोड़कर विषयान्तर में बह जाने की प्रवृत्ति भारवि, माघ आदि कवियों में जिस प्रकार मिलती है, वही सुबन्धु में भी है। सुबन्धु की रचना का कलापक्ष उदार एवं हृदयाकर्षक है।

Uma Pathak
Deptt. of Sanskrit
B.A. III + 1st yr

Scanned with CamScanner